P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक परम्परा गम्मत : एक अध्ययन

रेणु वडेरा
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
डॉ. सी.वी.रामन विश्वविद्यालय,
कोटा, बिलासपुर, छ.ग.

रामरतन साहू
विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
डॉ.सी.वी.रामन विश्वविद्यालय
कोटा, बिलासपुर, छ.ग.

सारांश

''छत्तीसगढ़'' अपनी कला और संस्कृति से समृद्ध रहा है, इसी कला और संस्कृति को आगे बढ़ाने में ''गम्मत'' का विशेष योगदान है गम्मत छत्तीसगढ़ राज्य के कोने–कोने में किया जाता है। वर्तमान में छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक परम्परा गम्मत लुप्त होते दिखाई दे रही है, इसे पुनर्जीवित करने हेतु प्रचार–प्रसार व प्रदर्शन की आवश्यकता है इन्हें पाठ्यक्रम में शामिल कर एवं लोक कला महोत्सव का आयोजन कर बढ़ाया जा सकता है।

मुख्य शब्द : लोक कला महोत्सव, छत्तीसगढ, गम्मत।

प्रस्तावना

भारत के हृदय स्थल में विद्यमान ''छत्तीसगढ़'' अपने बाहों में सत्ताईस जिलों को समाहित किए हुए दण्डकारण्य, कोसल, महाकोसल, चेदिषगढ़ तथा धान का कटोरा जैसे नामों से अभिहित होने वाला प्रकृति की सुरम्य गोद में पला–बढ़ा और पुष्पित हुआ है। छत्तीसगढ़ की सुंदर पर्वत श्रेणियाँ, पवित्र नदियाँ, तीर्थ स्थल, तपोभूमि के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं। छत्तीसगढ़ अपनी कला और संस्कृति से समृद्ध रहा है। इसी कला और संस्कृति को आगे बढ़ाने में ''गम्मत'' का विशेष योगदान है। गम्मत छत्तीसगढ़ राज्य के कोने–कोने में किया जाता है।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

गम्मत शब्द की व्युत्पत्ति के संदर्भ में देखें तो गम्मत शब्द की उत्पत्ति व्युत्पत्ति किस प्रकार हुई? यह असमंजस की स्थिति दिखाई देती है इस संदर्भ में पं. दानेश्वर शर्मा जी का मत है कि – ''यह खुला सच है तथा छत्तीसगढ़ का प्रबुद्ध साहित्यकार वर्ग विशेष रूप से लोक साहित्यकार वर्ग एवं इस विधा के स्थापित, प्रतिष्टित, अनुभवी प्रख्यात कलाकरों के नामकरण में प्रयुक्त शब्द ''गम्मत'' छत्तीसगढ़ भाषा का नहीं है।''

''गम्मत'' शब्द छत्तीसगढ़ भाषा का शब्द नहीं है अपितु मराठी भाषा का शब्द है। गम्मत शब्द महाराष्ट्र के 'विदर्भ' क्षेत्र के मराठा शासकों के साथ छत्तीसगढ़ में प्रविष्ट हुआ और यही का हो गया।

गम्मत शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सत्रहवीं–अठारहवीं शताब्दी में मराठा काल में हुआ। मराठा गम्मत शब्द का प्रयोग हंसने–हंसाने, हास–परिहास, मौज–मस्ती और मनोरंजन के लिये करते थे। छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध पारंपरिक लोकनाट्य–गम्मत प्राचीन लोकनाट्य है। भारत के समस्त अंचलों में स्थानीय कलाकारों, लोक गायकों, लोक नर्तकों, लोक वादकों द्वारा लोक गीत, लोक नृत्य व अभिनय के माध्यम से रात–रात भर मनोरंजन की अत्यंत लोकप्रिय प्राचीन परिपाटी है। छत्तीसगढ़ के इहिहासकार प्यारेलाल गुप्त के अनुसार

''गम्मत छत्तीसगढ़ की माटी से ओत–प्रोत उसकी संस्कृति का प्रतीक है।''

अध्ययन के उद्देश्य

1. छत्तीसगढ़ की ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्परा गम्मत कला का अध्ययन करना।
2. छत्तीसगढ़ लोक नाट्य गम्मत के विभिन्न भागों से परिचित होना।
3. गम्मत के विभिन्न भागों की विशेषताओं एवं कला संस्कृति से परिचित होना।
4. छत्तीसगढ़ में गम्मत कला के सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करना।

गम्मत का उद्भव, आविर्भाव कब हुआ? कैसे हुआ? इसके विषय में ठीक–ठाक नहीं कहा जा सकता इसका प्रामाणिक व लिखित इतिहास भी नहीं है मगर प्राप्त कुछ साक्ष्यों और जन श्रुतियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गम्मत का उद्भव 250–300 वर्ष पुराना है। इसका उद्भव मराठों के आगमन के साथ हुआ।

गम्मत के अंग

गीत–नृत्य

गीत नृत्य के अंतर्गत धार्मिक आख्यानों, कृष्ण लीला के भजनों को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

हास्य–प्रहसन

कथा के बीच–बीच में हास्य कलाकार (जोककड़) आकर सामाजिक जीवन से संबंधित हास्य व्यंग्य की प्रस्तुति करते है।

गम्मत के विभिन्न भाग

गम्मत को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता हैः–

1. सामान्य गम्मत (परंपरागत गम्मत)
2. विशिष्ट गम्मत (रतनपुरिहा गम्मत)

सामान्य अथवा परंपरागत गम्मत

गम्मत छत्तीसगढ़ का सर्वाधिक लोकप्रिय, सर्वकालिक, जनप्रिय लोकनाट्य है। परंपरागत गम्मत रामायण, महाभारत अथवा पौराणिक ऐतिहासिक कथानकों से संबंधित होता है। गम्मत के लोककलाकार इन कथाओं को अपने पात्रानुकुल अपनी स्मृति के आधार पर अपनी लोकभाषा में गढ़ लेते है। ये कलाकार सरल–सहज रूप से लोक शैली में प्रस्तुत करता है, ताकि अधिक से अधिक लोगों को उद्देश समझ आ सके। छत्तीसगढ़ के जन–जीवन, आचार–विचार, भाषा शैली, रहन–बसन गम्मत में आवश्यक रूप से विद्यमान है। छत्तीसगढ़ी लोक जीवन की ऐतिहासिक और कालजयी संस्कृति, संस्कार, परंपरा और रीति–रिवाज का दूसरा नाम है– 'गम्मत'।

सामान्य गम्मत में बीच–बीच में छत्तीसगढ़ के लोक जीवन की प्रस्तुति दी जाती है। जीवन में घटने वाली समस्याएँ, घटनाएँ, हंसी–ठिठोली, गरीबी, भूखमरी, सामाजिक प्रथा, सामाजिक कुरीतियों आदि को सहज सरल ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इनकी शैली हास्य व्यंग्य की, भंगिमाएं अतिरंजित पर यथार्थ परक तथा अनेक कथा– प्रसंगों से युक्त ग्राम्य जीवन की अनेक परतें मंच पर संवादों, गीत नृत्य, गम्मत के माध्यम से साकार होती है। गम्मत में गुरू वंदना, माँ सरस्वती वंदनाएँ, गणेश वंदना का भी विधान है –

''सरस्वती ने स्वर दिया, गुरू ने दिया ज्ञान।
माता–पिता ने जन्म दिया, रूप दिया भगवान।।

गम्मत के ख्यातिलब्ध कलाकर हैं – स्व. दाऊ मंदरा जी, पं. प्रयाग नारायण तिवारी, लक्ष्मण दास, धरमलाल कश्यप, मुकुंदराम साहू, झाड़ूराम निर्मलकर जगन्नाथ निर्मलकर, साहनी ठाकुर, गोकुल, देवदास रामगुलाम निर्मलकर, सीताराम आदि।

विशिष्ट अथवा रतनपुरिहा गम्मत

रतनपुरिहा गम्मत का संबंध छत्तीसगढ़ की प्राचीन राजधानी रतनपुर से है। यह गम्मत छत्तीसगढ़ के परंपरागत गम्मत से भिन्न है अतः इसे विशिष्ट गम्मत की संज्ञा दी गई जिसे रतनपुरिहा गम्मत के नाम से जाना जाने लगा। रतनपुर के प्रकाण्ड विद्वान, साहित्यकार, कवि बाबू रेवारामजी के काल तक आते–आते अर्थात् मराठा शासन के अंतिम चरण में रहस तथा गम्मत में अनेक विकार और विकृतियाँ आ चुकी थी। अतः बाबू रेवाराम जी ने मध्यकालीन भक्त कवियों के कृष्ण लीला के पदों का संग्रह कर तथा स्वरचित पदों को मिलाकर एक पद संग्रह की रचना की जो ''गुटका'' के नाम से रतनपुर में प्रसिद्ध हुआ। इस समय रहस की लोकप्रियता घटने लगी थी एवं गम्मत के फूहड़ प्रदर्शन की लोकप्रियता बढ़ती जा रही थी। अतः बाबू रेवाराम ने रहस को गुटका के पदों के साथ सुन्दर शास्त्रीय नृत्यों के समावेश तथा गम्मत प्रहसनों का

समावेश कर एक नई लोक नाट्य विधा जनता के समक्ष प्रस्तुत की जिसे उन्होंने 'रतनपुरिहा गम्मत' नाम दिया।

रतनपुरिहा गम्मत में भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं का सुन्दर चित्रण किया जाता है। रतनुपरिहा गम्मत में बाबू रेवाराम के गुटका का अत्यधिक प्रभाव है। रतनपुरिहा गम्मत 'बैठे–साज' का गम्मत है। रतनपुर के प्रसिद्ध मालगुजार स्व. लक्ष्मीनारायण दाऊ के संरक्षण के कारण रतनपुरिहा गम्मत अपने चरमोत्कर्ष तक पहुंचा। यह उल्लेखनीय है कि सामान्य गम्मत की भांति इस विशिष्ट विधा में अभद्र, अश्लील, फूहड़ तत्वों की घुसपैठ कभी नहीं रही।

यह लोकनाट्य रतनपुर के ग्यारह स्थानों में गणेशोत्सव के दौरान भादो एकादशी से पूर्णिमा तक कुल 05 दिन तक आयोजित होता था। भादों मास में आयोजित होने के कारण इसे भादो गम्मत भी कहा जाता है। वर्तमान में यह केवल एक या दो स्थानों तक सिमट गया है। इस परिपाटी के कलाकारों में पं. कपिल शर्मा, केसरसिंह गिर, कमल गिर गोस्वामी, लाला महाराज, शंभू महाराज, भागवत प्रसाद तिवारी, लक्ष्मी नारायण दाऊ लखीराम कश्यप, भंशीलाल तिवारी, लेखराम मालवीय आदि प्रसिद्ध रहे।

गम्मत के कलाकारों ने गम्मत के इतिहास में अनेक क्रांतिकारी प्रयोग किये और केवल छ.ग. ही नहीं अपितु देश–विदेश में जाकर भी छत्तीसगढ़ को गौरवान्वित किया है।

निष्कर्ष

वर्तमान में छ.ग. की सांस्कृतिक परंपरा का द्योतक 'गम्मत' लुप्तप्राय है, इसे पुनर्जीवित करने के लिए इसके प्रचार प्रसार एवं प्रदर्शन की आवश्यकता है। प्रचार–प्रसार का सबसे अच्छा माध्यम है, शिक्षक एवं विद्यार्थी, अतः इतिहास एवं हिन्दी आदि विषयों के पाठ्यक्रम में इसे शामिल किया जाना चाहिये ताकि युवावर्ग छ.ग. की इस कला के बारे में जान सकें एवं उनकी इस कला में रूचि जागृत हो साथ ही समय–समय पर लोक कला महोत्सव का आयोजन कर 'गम्मत' का प्रदर्शन किया जाना चाहिये, ताकि हम छ.ग. की इस सांस्कृतिक विरासत को चिरजीवी रख सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *कन्नौजे डॉ. उग्रसेन, छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य रहस का अनुशीलन 2001. पाठक, डॉ. विनय कुमार, स्मारिका।*
2. *अमृतफले डॉ. मिलिन्द, छत्तीसगढ़ राज्य और उसके सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रचलित गम्मत का अध्ययन।*
3. *चतुर्वेदी पं. श्यामलाल, लोक मड़ई।*

4. *देशमुख संतराम 'विमल', लोकनाट्य परंपरा एवं प्रयोग।*
5. *सिंह वीरेन्द्र बहादुर, गम्मत।*
6. *श्रीवास्तव, ब्रजेश, रतनपुर दर्शन।*
7. *तिवारी, नंदकिशोर, रहस।*
8. *त्रिपाठी संजय एवं त्रिपाठी चंदन, छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ।*